७७१९

॥ ॐ ॥

श्रीगणेशाय नमः

श्रीदेवाविलास.

द्वितिय भाग.

सुबोध बावनी.

मंगळाचरण.

दोहा.

वंदो श्री गजवदनकों, प्रथम जोरि जुग पान;
जाकों कविवर संतजन, बहु बिधि करत बखान. १
श्री गुरु दीनदयालकों, वार वार शिर नाइ;
बरनों बोधक बावनी, मनहर कवित्त बनाइ. २

कवित्त.*

ॐमाके कुमार गले, मंजुल मनीको हार,
मोदक अहार जाकों, [1]मूषक सवारी हे;

* આ કવિતાની શરૂઆતથી ॐनमःसिद्धं તથા ક્રમેથી સ્વરો અને વ્યંજનો આવશે. ૧ ઉંદર.

जाको नाम गावत, अबुध होत बुधवंत,
एक दंत दयावंत, संत सुखकारी हे;
मंगल करन शोक, संकट हरन हार,
मतिके उदार वाको, तात त्रपुरारी हे;
बडे कविराय आदि, ग्रंथमें मनाय देवा,
एसें गनपति जुंपें, वंदना हमारी हे १

नमों मात वाक बानी, विद्या हूकी दानीजानी,
[1]पानीमें बिराजे [2]वीन, वाहन मराल हे;
वेदही पुरानहींको, भेदही जनाइ देत,
सीस पें अनोप [3]वेनी, जाकों चंद भाल हे;
भूपन अमूल आभा, लेत हे सु अंग अंग,
मोती मनी लालही, प्रवाल गळे माल हे;
देवीदास मूढकों, बिशाल बुध देनहारी,
ब्रह्मकी कुमारी कवि, संतपें कृपाल हे. २

मति जो बिकानी दाम, कामसें जुडानी प्रीत,
राखत गुमानी मोह, जूठी जिंदगानीको;
दीयो दान पानी तें, न कीयो संग ज्ञानी हूंको!
बुरी बात तानी! नेह. कीनो जाइ [4]व्रानीको!
बुधपें बुराइ ठानी! भली शीख मानी नहीं!
आन्यो ना बिचार कुछ, लाभ अरु हानीको!

---

१ હાથ. २ વાજીંત્ર. ૩ ચોટલો. ४ દાસી–કુલટા.

देवा दधि [१]दानीको ! नृ, गायो मृदु बानी हीतें;
जातहे जवानी जेसें, पूर जात पानीको. ३

सीसपें सु [२]बाल [३]वेरी, बांधत हे पाग [४]टेरी,
ओवन किनेरा बाँकी, कोर कशमेरी हे;
अंबर अमूल पेरी, चावत हे पान बीरी,
बातही घनेरी यामे, [५]तात पर केरी हे;
संतजन के'त [६]टेरी, सोइ ना सुनेरी कान,
काया में मगन माया, जाने यह मेरी हे;
पर त्रीया हेरी काम, दिलमें जगेरी देवा,
आगें यम द्वारसेरी, बिकट घनेरी हे. ४

धनहीं के काज धाइ, देशही विदेश जाइ,
अनंत उपाइ कीनी, नोकरी पराइ हे;
काहूसों बुराइ अरु, काहुसों जुठाइ एसी–
करकें लुचाइ माया, बोतही कमाइ हे;
लछकी बडाइ पाइ, अतीही फूलाइ अंग,
देत नही पाइ कछु, आपही न खाइ हे;
जबे जम आइ सीस, मारेंगे गदाइ भाइ,
तबे मन मांइ देवा, घनों पछटाइ हे. ५

अतिहीं अनुप देह, पायो हे मनुष हूं को,
कीजीअें बिचार यार ! हीरो हाथ आयो हे;

---

१ श्रीकृष्ण. २ केश. ३ गूंथी. ४ वांकी. ५ निंदा.
६ पोकारी.

तात मात दारा सुत, भ्रातमें भूलाइ रह्यो,
काम धाम दाम हीमें, कहा तुं फुलायो हे;
करीले भलाइ ! कछु, कीजें न बुराइ काज;
चोरासीमें केती बेर, आगें भँटकायो हे,
हरीको सँभार तातें, होयगो संसार पार,
एसें ग्रंथकार आगें, ग्रंथहीमें गायो हे. ६
आज काल करत हीं, आयुष उडाइ जात,
जेसे उडी जात तरु, आक हूं के तूरहीं;
मायाको बिलास नट–बाजी ज्यों फेलाइ रह्यो,
दोय घडी देखवेकी, पीछे सब धूरहीं;
जेसें सरिताको पूर, जात हे समुद्र बीच,
तेसें जग काल मुख, जायगो जरूरहीं;
जानको[1] गुमान तजी, भजी भगवान लीजें,
देवीदास साची बात, यामें नहीं कूरहीं. ७
इशनें[2] अनुग्र' कीनो, एसो नर देह दीनो,
ताहीको न नाम लीनो ! एसो भयो बावरो !
परदारा हूंको रंग, लागी रह्यो अंग अंग;
करबेमें ताको संग, सदा वाँको [3]मावरो;
पुन्यकी न जाने बात, करत पराइ [4]तात,
निंदामें [5]अघात नाहीं, बातन को चावरो;
देवीदास कहे नेक, सीख नहीं माने मूढ !

---

१ શરીર. ૨ પરમેશ્વર. ૩ અભ્યાસ. ૪ નિંદા. ૫ ત્રસ.

चोरासी में जाय बेकों, भयो हे उतावरो. ८

इद्रको गुमान गार्यो, बाहुपें गिरीश धार्यो,
व्रजकों उगार्यो जिन, मेघ के प्रहार तें;
कंसको पछारे जरा,-संध जेसें जोध मारे,
केते दुष्ट काट डारे, चक्र हूकी धारते;
कुंदनपुरीमें जाइ, कीनी मरसाइ अति,
रुकमनी हरी ल्याइ, भूपति अपार तें;
एसें प्रभु हे उदार, वाही कों संभार यार,
कारज सरेगो देवा, नंदके कुमार तें. ९

उदे भयो भाग ताँते, एसो हे विलास तेरो!
उंचे मेल मेडी तामें, रोशनी तमामहीं;
मंजुल बिछोना ठाठ, कुरसी कपाट हूके,
खूब मृदु खान पान, रूपवंती [1]बामहीं;
पूतही सपूत स्याना, जूलत जूलाना बीच,
दीरघ खजाना बोत, भर्यो वाँमे दामहीं;
पुन्य के प्रभाव देवा, उत्तम जनम आयो,
एतो सुख पायो पें'न, गायो राम नामहीं. १०

ऊज्वल अटारी म्हेल, छटा गोख बारी हूकी,
चित्रही विचित्र रंग, कंचनकी [2]गारी हें;
मनी हीरा लाल आभा, लेत या दिवाल बीच,
जुम्मर बिलोरी हुंकी, रोशनी अपारी हे;

---

१ स्त्री. २ लेप.

रंजत किंवार काँच, मंजुल कनक हुंके,
सीतही सुगंध मंद, लागत [1]बयारी हे;
एसोही विलास पायो, पुन्यकी प्रबळता सों,
देवा तीन लोकमें, धरम सुखकारी हे. ११

एक ब्रह्म हुंतें जीव, भये हे अनेक ताँके,
रूप गुन न्यारे न्यारे, नामहीं अनंत हे;
जेसें रवी मेघ वस्त्र, मृतिका को रूप एक,
बिंब बिंदु तंतु पात्र कोउ ना गनंत हे;
सोइ जगदीश भरपूर हे ब्रह्मांड बीच.
चार खान ब्रह्मा आदी, कीट परयंत हे;
सुख अरु दुःख पाप, पुन्यहीतें न्यारो देवा,
दाता हूंको दाता एक, सोइ भगवंत हे. १२

एरावत नंदी ओर गरूड मराल [2]पति,
सोइ आठो [3]जाम जाको, ध्यानही धरत हे;
शेष अरु शारदा, गनेश मुनी नारदही,
गावतही गान वाँके, पायन परत हे;
रच्यो हे बेराट जिन, रवी शशी तारा घन,
ईशनको ईश तातें, कालही डरत हे;
पलमें उपावे एक, पलमें खपावे देवा,
सोइ प्रभु जगपति, पालही करत हे. १३

ओपमा अपार मति, काहूकी न लहे पार,

---

१ પવન. ૨ શિવ વિષ્ણુ બ્રહ્મા. ૩ પોર. ૪ વાણી.

बानी हूंते बार, वाँको केसें गुन गाइयें;
अगम अगाध गति, बरनी न जात कृति,
रचना रचाइ अती, देखीकें सराइयें;
तारा घन शशी भान, चार खान आदि आन,
रचीहे जहान भगवान ध्यान लाइयें;
याको नहीं रंग रूप भूपन को सोइ भूप,
देवीदास कहे ताको, पार हूं न पाइयें. १४

औंधी करी आयो नर, देह पायो मन भायो,
जबहींतें जायो, तबहींजें सुख पायोहे;
तात हुलरायो मात, झूलना झलायो खूब,
बालापन बीत्यो पीछे, जोबन जनायो हे;
मानुनी[1] के संग मन, लीन [2]वारी मीन जेसें,
गोरे गोरे अंगही के, रंगही फूलायो हे;
काम अरु क्रोध लोभ, मोहमें फसाइ रह्यो,
देवीदास नाम, रघुवीर को न गायो हे. १५

अंकजो [3]मराल पति लीखेहे लिलाट बीच,
कोटिही उपाय कीजे, टारे हीं'न टरे हे;
साठही हजार भूप, सग्रके कुमार सोइ,
कपील मुनीके धाम, आपहींतें जरे हे;
पंडू हरीश्चंद्रराय, बनही गवन कीनो,

---

१ સ્ત્રી. ૨ જલ. ૩ દૈવ.

रामचंद्र तजी राज, रावन सों लरेहे;
होनहार होय सोतो, होइहे जरूर देवा,
तातें संत सोच काहू बातको न करेहे. १६

अरे मन बार बार, कीजीयें विचार यार !
हरीकों सँभार ! यातें, पार भव पायगो;
रूपवति नार प्राण, प्यारे दिलदार तेरे,
पूत परिवार सोतो, कामही न आयगो;
मेरो मेरो मानी रह्यो, तेरो तिलभार नाही,
छोडीकें आगार सम,—सानमें सिधायगो;
जायगो तूं यमद्वार, खायगो अपार मार,
देवीदास जबे दिल, माही पछतायगो. १७

कली दुःखकारी [1]मारी, आयो जग [2]बारी हूमें,
नीतिकी उखारी बेल, अनीति सुधारी हे;
बडेही आचारी [3]मद्य, मांसके अहारी भये,
केते संत दाम धाम, राखत हजारी हे;
करेहें बिपारी [4]कूर, लांच लेवे न्यायकारी.
केते नर नारी यामें, भये व्यभिचारी हे;
कठीन जमानो भारी, न्यारी मन जात हारी,
देवीदास तामें पत, राखे गिरधारी हे. १८

खरी हून माने बात, जूठीमें अघात नाहीं,

---

१ માલી. ૨ બગીચો. ૩ દારૂ. ૪ જૂઠ.

करत पराइ [1]तॉत, मूढ दिन रातहीं;
नात अरू जातहीमें, अपनी बडाइ [2]गात,
हेरी हेरी निज [3]गात, बहूत फुलात हीं;
ईशकी सुनंत गाथ, हियमें सुहात नाहीं,
संतते लजात सत–संग में न आतहीँ;
मात तात सुत [4]दारा, भ्रातमें लोभाइ रह्यो,
देवीदास हरीनाम, कबहों न गातहीँ. १९

गये राव राना बडे बादशा' बजीर दाना,
केते बुधबाना अरू केते विदवानाहे;
केते हिंदवाना वाँमें, केतेहीं मुसल्लमाना,
केतेही प्रवीन स्याना, केतेही दीवाना[5] हे;
केते कलावंत ताना, जानते बजाना गाना,
छोडी म्रदु साज प्याना, बसे समसानाहे;
सांझही [6]बिहाना चल्यो, जातहे झहाना देवा.
कीजे ना गुमाना यम, राना हाथ जाना हे. २०

घरी घरी पल तेरी, आयूजो घटाती जाती,
जावत जुवानी जरा, जोरहीसें आतीहे;
देह मदमाती तेरी, वज्रसें कठोर छाती,
चाहत पराइ घाती, दयाहुं न आतीहे;

---

१ निंदा. २ કહેવું. ૩ શરીર. ૪ સ્ત્રી. ૫ ગાંડો.
૬ પ્રાતઃકાળ.

तूंतो दिन राती काती, राखत कलेजे बीच,
तेरे शिर काल हूंकी, गाजन गजाती हे;
होयगो [1]बराती सम-शान, लगे मित्र नाती,
देवीदास पीछे तेरो, कोइ ना संघातीहे. २१

नये नये रंग वाला, ओढत दुसाला अंग,
कंचन प्रवाला गले, मोतनकी मालाहे;
देह मतवाला देख, होतहे खुशाला खूब,
खावत नवाला मद्य, पीवत पियालाहे;
दीरघ दिवाला बीच, सदन विशाला जामें,
रूपवंत बाला संग, खेलत खियालाहे;
देवा दीपमालाकी, उजाला चिहू ओर राजे,
एसो सुख पायो पें'न, गायो नंदलालाहे. २२

चल्योही झहाना जात, रात अरू दिन प्रात,
तूंतो ललचात तात, मात भ्रात भेटामें;
गात प्रफुलात खात, भोजन मधुर भात,
ओढत बनात मोही, रह्यो रंग रेटामें;
बोतही बढात बैर, तामें नाही अकुलात,
अरीकों हटात खुशी, रेत ख्याल खेटामें;
देवीदास कहे कछु, दिलमें दरात नाही,
एक दिन आयगो तुं, कालके जपेटामे. २३

---

१ જાનૈયાઓ.

छटादार [1]ऐन हूंमें, मोज पायो [2]मैंन हूंमें,
मृगनेणी सेन हूंमें, मोह्यो मंदमतीको;
मीठे मृदु खान हूंमें, आछे मधूपान हूंमें,
मायाके गुमान हूंमें, छक्यो [3]वाम गतिको;
कथाहू न सुने कान, धरे ना हरीको ध्यान,
देत ना पसारी पान, दान एक रतीको;
ऊंचे कुल मांही जायो, बोतही बिलास पायो;
कब होंन गायो देवा, नाम रमापतिको. २४

जबे झूर हीतें दुख, पायो हे गयंद अति,
तबे हरी धायकें, बचाय गजराजकों;
पंडवोंकी त्रीयाको अनंत चीर पूरे आइ,
सभा बीच राख, लीनी द्रौपदीकी लाजकों;
तातें संत काम क्रोध, लोभ अरु मोह तजी,
आठो जाम गावतहे गरीबनिवाजकों;
ताँको भज वार वार, धडी ना बिसार यार!
देवीदास दीनके दयाल व्रज राजकों. २५

झरे नीर शीश गंग, आछीही विभूत अंग,
उमा अरधंग संग, भूत प्रेत भागीहे;
व्यालहूंके गले हार, आकही धतूर आ'र,

---

१ धर. એક જાતનું કાળા રંગનું પુરૂષનું લૂગડું. ચદર.
२ કામ. ३ અવળી.

बिषहीकों कंठ धार, नंदीकी सवारीहे;
राजतहे तीन नेन, अंग भंग कीयो मेन,
दास भक्तहीकों देन, आनंद अपारीहे,
जाकोहे महेश नाम, देवा गाय आठो जाम,
सोइ दुःखहारी सुखकारी त्रिपुरारीहे. २६

नये [1]कंज नेनवाला, जटाका दुसाला शीश;
ओढेही गयंद छाला, शशी बाल भालाहे;
संगही कराला भूत, प्रेत हे बिशाला बीर,
गळे बीच नाग काला, रुंडनकी मालाहे;
हाथमें त्रिशूल झाला, डाक ताल गात ख्याला,
देह मतवाला कलीकुंद तें उजालाहे;
पीवत पियाला भंग, होतही खुशाला देवा,
दीनपें दयाला एसें, ईसजु कृपालाहे. २७

टरे ताप पाप शंभू, नामके प्रतापहींतें,
जपे जाप सोइ सुख, संपतीकों पावेहे;
रावन, जलंध्र, बाण, आदी केते भक्तहीकों,
कीनेंजु निहाला ताँकों, अंत गुन गावेहे;
ओरही असूर सूर, केते मुनी वृंद योगी,
साधू कही सिद्ध वाँको, ध्यानही धरावेहे;
काशी कईलाश वासी, एसें सुख राशी ईश,
देवीदास कोइ वाँको, पारहू न पावेहे. २८

---

१ કમળ.

छयोहैं महेश बास, गिरीजो कैलाश हूँपे.
आवत सुवास चिहु, पासतें सुहावनी;
मंजुल ऑराम धाम, रजत तमाम यहाँ,
भूत प्रेत बीर हूंकी, राजत है छावनी;
गांध्रवसो गान तान, गावत बजात साज,
आभा इन बाग हूँकी, अति मन भावनी;
यहाँ तहाँ राग रंग, बाजही मृदंग चंग,
देवीदास ईश पुरी, आनंद उपावनी. २९

डरेना दीवाना! जोर, देखी यमराना हूंको,
अतिही फुलाना रहे, जोबन गुमानामें;
देखी बलवाना ज्वाना, करेजु धिगाना धाइ,
तोरतहे ताना भये, मस्त मद पानामें;
खाता मन माना खाना, गाताजु रसीक गाना,
धरे ना प्रभुका ध्याना, झूलत झुलानामें;
देवीदास कहे स्याना, तजीदे गुमाना अंध!
छोडीकें जहाना यारो, जाना शमशानामें. ३०

ढरे रन धीर बीर, केते रन भोमीहूंमें,
रावनही कुंभ मेघ नाद बाद भयेहे;
द्रोनही गंगेव कर्न, सुजोधन जयद्रथ,
अभिमन्यु आदि केते, भारथमें कहेहे;
कालही यवन जरासंध जेसें बडे जोध,

प्रथिराज शूर अरु सामंत ना रयेहे;
देवीदास कहे कछु, कीजें ना गुमान अंध !
एसे बलवंतसो अनंत आगे गयेहे. ३१

णणुकार वार वार, बाजे घडीयारहूमें,
आयूजो घटाती वांकी, सूचना जनावेहे;
पलही मिनिट घरी, जातहें कलाक [1]जाम,
रात द्योस मास एसें, बर्ष बही जावेहे;
केतेही बरस अेंसें, खेलबेमें बीती जात,
तूंतों नही जाने जो पें, संत समजावेहे,
अरे ! अभिमानी ! नेन, खोलकें निहार देखा,
सूते सुख सेज तोंकों, नींद केसें आवेहे ! ३२

तरुकी लतान पंछी, करे चहचान आई,
होतही [2]बिहान न्यारे, न्यारे उडि जावेहे;
बादलकी घटा छटा, छाइहे गगन बीच,
पौंनका झपेटा पाइ, सबे बिखरावेहे;
सरिताको पूर वर्षा—कालमें बिसाल चढी,
एक छिन माही जाही, सागर समावेहे;
तेसें जगठाठ कुंद—कली जेसो देवीदास,
पलमें फुलावे फेर, पलमें कुमावेहे. ३३

---

१ પહોર. ૨ સવાર.

थक्यो राम नामहीकी, कथामृत पानहीमें,
काम क्रोध लोभ मद, मोहमें तूं ! थक्यो ना;
बक्यो देन लेंन हूंकी, आठो जाम कूरी बात,
हरी गुन एक घरी, मुखहीसें बक्यो ना;
छक्यो दाम जोवन, गुमान मद्य पानहीते,
प्रभुकी विचीत्र लीला, देखी कछु छक्यो ना;
सक्योहे उठाइ पाप, हूंकी मोट देवीदास,
कबहु न भवजल, पार होइ सक्यो ना. २४

दधीको अगाध वारी, न्यारी मन जात हारी,
जामें मच्छ भारी भारी, बडे दुःखकारीहे;
तामें असुरारी धसे, [1]कोरमको रूप धारी,
सिंधूतें निकारी लीने, रत्न दश चारीहे;
शंखासुर मारी वेद, वारी मुख [2]चारी कों-
दिये पनगारी पति, एसें उपकारीहे;
जाकों उरधारी संत, तरेहें अपारी आगें,
देवीदास एसें सुखकारी श्री मुरारीहे. २५

धर्यो रहे धन माल, मोती मनि हीरा लाल,
मानिक मवाल कोरी, रूपीया रियालही;
उंचीही दिवाल वॉमे, बंगला बिशाल बोत,

---

१ કચ્છપ. ૨ બ્રહ્મા.

आछी अश्वशाल गजशाल मेडी मालही;
कोट सूरवाल आछे दुपटा दुमाल अरु,
केते पटुलाल साल, रेशमी रुमालही;
सोइ छोडी जायगो तूं, काल बिकराल हाथ,
देवीदास संग ना चलेगो एक वालही. ३६

नरतन पाई शील, राखीए सदाई भाई!
कामनी पराइमाइ बाइ सम [1]भाइयें;
दया दीनताइ दिलमांइ जु द्रढाइ यार,
तजीयें जुठाइकों सचाइ उर लाइयें;
छोडदे लुच्चाइ अरु मनकी कुटीलताइ,
निज मुख निज प्रभुताइ न जनाइयें;
देवीदास कीजीयें भलाइ जु बुराइ तजी,
गुरुकों रीझाइ रघुराइ गुन गाइयें. ३७

पतीके बियोग सती, देहकों जलाइ देत,
चंदकों निहारी प्रेम, राखत चकोर ज्यों;
स्वातकी सदाइ बुंद, चाहत पपैया जेसें,
नाचत हे मोर सुनी, गाजनकी गोर ज्यों;
दीपमें खद्योत जरे, प्रेमके प्रसंग हीतें
नटहूंको ध्यान एक, लागी रह्यो दोर ज्यों;
देवीदास एसें ध्यान, हरीमें द्रढाइ लीजें,

---

[1] જાણીએ.

जेसे गोपिका को प्रेम, नंदके किसोर ज्यों. ३८

फस्यो फूल बासनमें, अली एक गोबरको,
उड्यो नही तोंलों जोंलों, कुस्म कुमलायोहे;
आयो द्विजराज सोइ—भृंगको प्रसून तोर्यो,
उत्तम अनोप नीर गंगमें नवायो हे;
विप्र वेद बानी सेवा, ठानी जु महेश जूकी,
वही पुष्प ईशहूंके, शीशपें चढायो हे;
देवीदास तांते जाइ, कीजीयें सुसंग भाइ !
ऊंचसंग पाइ अली[1] ऊंच पद पायोहे. ३९

बलीके जु यज्ञ बीच, हरीनें प्रपंच कीनो,
विप्रको स्वरूप वपू, वामनको पायकें;
वेदहूंकी धुनी सुनी, भूपति बुलाइ लीनो,
मांग मांग विप्र ऐसो, कह्यो भूप आयकें;
विप्र कहे तीन पात्र, दीजीयें छितीको दान,
भूपती तुरीत दीनो, पानी जो पसायकें;
अंतमें बेराट देह, कीनों विश्वनाथ देवा,
हरीहाथ डंड सो, ब्रह्मंड लगो जायकें. ४०

भयो ना भलाइ काज, नर देह पायो साज,
संतको समाज देखी, शीशतें नमायो ना;

---

१ भ्रमर.

मोह्यो हेरी गोरो चाम, तनमें बढायो काम,
माया धन धाम बाम, तामें तूं अघायो ना;
पुन्यकी न जाने रीत, पापसें अधीक प्रीत,
करेजु अनीत चित्त, यमतें डरायो ना;
रह्यो मेरो मेरो मानी, जूठी जूठी बात तानी,
देवीदास अभिमानी, हरीगुन गायो ना. ४१

मनही गयंद भारी, ताकों अंग लीजें न्यारी,
काम क्रोध लोभ मद, चरन कहावेरी;
शीश वांके मोह मान, कल्पना दोइ कान,
दंभही दसन[1] सूंढ, तृषना हलावेरी;
दुबधाके नेनसो निहारी चेन पावतहे,
प्रकृतीको पूछसो तो, पीछेही फिरावेरी;
देवीदास मन हाथी तबे बस होवे जबें;
ज्ञानको अंकुश गुरु, माउत लगावेरी. ४२

यज्ञ रखवारे, अवधेशके दुलारे प्रभु,
मुनिकों उगारे केते, दुष्टहीकों मारेहे;
सुर्पनखा नासा कान, बानहीसो काट दारे,
शिलापें चरन धारे अल्याकों उधारेहे;
भूपति जनक द्वारे, बडे [2]छितीपाल हारे,
ईशको धनुष भारे, राम तोडदारेहे;

---

१ દાંત. ૨ રાજા.

सीयाकाज सारे पर्शुरामको गुमान गारे,
देवीदास प्रान प्यारे, कोटी संत तारेहे. ४३
रह्योजो कपाल ईश,[1] नवलख तारा ईश,[2]
इंद्र सुराधीश जूपें, बडी मित्रताइहे;
हरे अंधकार एसो, तेजहे अपार पुनि,
वंस परिवार हीतें, छिती रही छाइहे;
प्यारेजु रतन भ्रात, भगनी रमा विख्यात,
पयोनिधि जेसो तात, विष्नुसें सगाइहे;
विधिनें ललाट अंक, लख्योहे मयंक देवा,
टर्यो ना कलंक याको, इतने सहाइहे. ४४
लग्यो हरी नाम लेन, प्रेमसों प्रल्हाद जबे,
तबे वांके तात आइ, केती बेर वार्योहे;
नेकही न मान्यो पूत, अरी सम जान्यो भूप,
अति क्रोध आन्यो मनो, मारवेकों धार्योहे;
खड्ग[3] सों प्रहार्यों नीर, नाउमें[4] डूबार्यो पीछे,
वहनीमें[5] जार्यो गिरी,[6] श्रृंगहीतें दार्योहे;
एते कष्ट हांतें देवा, भक्तकों उगार्यो प्रभु,
नरहरी रूप धार्यो, हिनाकंस मार्योहे. ४५
वयो जात जान्हवीके,[7] वारीमें विशाल ब्याल,[8]

---

१ શિવ. ૨ ચંદ્ર. ૩ તરવાર. ૪ વહાણ. ૫ આગ્નિ. ૬ શીખર. ૭ ગંગા. ૮ સર્પ.

खेलन शिकार नहां, आगे पनगारीहे;
नागकों निहारी चैन, पायोजु खगेश भारी,
पंखकी जपेट डारी, वाकों चंच मारीहे;
छूट गये प्रान जान,[१] भइजु मुरारी जूकी,
शंख चक्र धारी कीनी, गरुडपें स्वारीहे;
सदा पाप हारी शत्रु, तापनें निवारी लेत,
देवीदास मात गंगे, एसें सुखकारीहे. ४६
शठ काम क्रोध लोभ, मोहमें मगन भयो,
शीलही संतोप दया, ग्यान रिदे आयो ना;
जूठे देन लेन हूंके, फेंनमें[२] फमाइ रह्यो.
मेनहूंपें मोज पायो, नेकही अघायो ना;
लंपट लबारी ज्वारी, विभिचारी हूंनें यारी,
संतकी समाज न्यारी चेन चित पायो ना;
अरे अभीमानी! बात, ज्ञानीकी न मानी देवा,
गइ जिंदगानी तों लों प्रभु गुन गायो ना. ४७
षष्ठही अढार चार, पढीकें प्रवीन भयो,
पिंगलके छंद शीख्यो, रस अलंकारको;
सप्तम स्वर गीत राग, रागनीके न्यारे रूप
वारीको तरन सीख्यो, फेर बो तुखारको;
कोक, न्याय रीत, हीरा मानिक प्रवाल लाल,

१ शरीर. २ कैफ.

मोतीकी परीक्षा सीख्यो, वैदकके सारको;
देवीदास एतो वृथा, सीखशे तमाम तों लों,
जों लो गुन गायो नहीं, नंदके कुमारको. ४८

समताको टोप शीस, बहन्त बिचार हूको,
शीलकी लगाम ग्यान, अश्वहीको डारियें;
जीन जगदीश नाम, कटी बंध केशवको,
धीरजकी ढाल सदा, पीठहूपें धारियें;
करुना कटारी बंध, बरछी विहारी जूकी,
क्षमाके खडग हीतें, शत्रूही संहारियें;
एतोही समाज साज, जक्त रन भोंमी बीच,
देवा काम क्रोध लोभ, मोह रिपु मारिये. ४९

हरीकों संभार घरी, एकना बिसार यार !
वार वार एसो दाव, फेरही न आयगो;
करीले सुकृत पुनी, सेवा गुरु संतहूकी
ऐसी जो मनुषदेह, फेर कहां पायगो !
नात जात मित्र मात, तात सुत भ्रात छोडी,
[1]रीते हाथ आयो तेसे, यम हाथ जायगो;
लीयो ना प्रभुको नाम, कीयो ना भलाइ काम,
देवीदास एसें दिल, मांही पछतायगो. ५०

लग्यो जु किरात हाथ, खेंचनें कबान बान,

---

१ ખાલી.

आयकें सींचान राह, रोक्यो असमानको;
के'तही [1]कपोत प्यारी, गायजो विहारीलाल;
करेगो बचाव अेही, तेरे मेरे मानको;
अंतेमें भोयंगर[2] डस्यो, पारधीके पायनमें,
छूट गयो तीर जाइ, लग्योहे सिचानकों;
शत्रूकों संघारी प्रभु, भक्तकों उगारी लेत;
राखले भरोसो देवा, करूनानिधान को. ५१

क्षमा अपराध कीजे, दीनके दयाल प्रभु,
मैंतो हों पतीत यार, लंपट लंबारीको;
संत सुखकारी हूंको, लीनो ना सरन जाइ!
नेह कीनो धाइ धाइ, दुष्ट दुराचारीको!
पावसेर अन दान? दीयो ना पसारी पान!
कीयो नाही स्नान भागेरथी पापहारीको;
कुंजके बिहारी भव वारीतें उगारी लीजें,
देवीदास कहे डर भारी यमद्वारीको. ५२

ज्ञाताकों विचार लेहू! अज्ञता निवार देहू;
एहू मोक्षद्वार यार! वार वार पावे ना,
तज्ञ हो तपास स्वास, विश्वहे विनाशवान,
अरे! मोह बस कीश,[3] कीर[4] ज्यों बंधावे ना;
लघ्रतासें दीन नाथ, नंदलालकों संभाल,

---

१ હોલો. ૨ સર્પ. ૩ વાંદરો. ૪ પોપટ.

होवेगा निहाल इष्ट देवा बिसरावे ना;
चिंतामनी पाइ भाइ ! करीले कमाइ चाइ,
गुमाइ बहूत बेर, अबही गुमावे ना. ५३

४ ५ ८ १
वेद सर खंड शशी, वाम[1] अंक गति मिती,
नौमी गुरु शुक्ल मधु[2] मासमें समासही;
देथा मारू चार्न देह भावसों कहाति जाति,
देस स्वच्छ कच्छ ग्राम बाबिया निवासहीं;
देवीदान दीनो देवीदासही प्रकाश कीनो,
नवीनो नगीनो ग्रंथ बावनी बिलासही;
सुबुधी उपावनीसो, तापको नशावनी है;
भावनी सुजानको बढावनी हुलासही. ५४

राग-मालाना ख्याल-ताल त्रिताल.

(अनुक्रमे दरशावेल रागनी गायनमां छाया आवे.)

એસેં બંસુરી બજાવે કાનરી, પ્યારે બંસુરી બજાવે કાન;
સપ્ત સુરન એકીસ મૂર્છના, ગ્રામ તીનસેં કર કલ્યાન. ટેક૦

તાન માનસેં કીન કાનરો, ખંભાવતીકે ગાવે ખ્યાલ;
મલ્લાર મોહનકો અતિ મનભાયે, ખ્યાગ અલાપત સુઘરકાન. એ. ૧
પરજ બિહારીકોં લગી મન પ્યારી, પીછેહી પ્રકાશ કીયો કેદાર;
ગાય બિભાસહી પ્રાત ભયેતેં, ભૈરવ ગાવત નંદકુમાર. એ. ૨

---

૧ ઊલટા. ૨ ચૈત્ર.

ભૈરવી ગાવતહી બનવારી, ટોડીકો સ્વરૂપ બતાય;
મદનમોહનનેં બિલાવર કીની,આશા મધુરી સ્યામ બજાય. એ. ૩
શ્રીગિરિધરને ધનાશ્રી ગાઇ, સારંગ ગાતહી કૃશ્ન સુજાન;
કાફી સુન મન મોદ ભયેતેં, સોરઠકી મન રંજન તાન. એ. ૪
પૂરવકી ધુન કાનપરી તબ, સુર નર ખગ મૃગ અચલ સમીર;
દેવા બ્રજપતિ ગોડી બનાઇ, થાર રહ્યો યમુનાકો નીર. એ. ૫

ધનાશ્રીની ઠુમરી–તાલ ત્રિતાલ.

છાંડો છાંડો રી લાલ મોસેં બતિયાં, (બે વાર.)
બતિયાં સુનત મોરી છતીઆ જલત;
આપ જાઓજી જાઓજી સોતિનકે[1] દ્વાર;
કરો ઉનસેં પ્યાર તુમ સુગર કાન. ટેક ૦

નિસીદિન રહત સોતિન સંગ હિલમિલ. હમસેં કરત નિઠુરાઇ,
મુખસેં મોહન મત કરો ચતુરાઇ;
છલબલકી બાત મોંસેં સહી ન જાત
કરૂં તનકી ઘાત મૈંતો તજુંગી પ્રાન. છાંડો. ૧
તન સનગાર નધરૂં દેવા નવસત, કરો તુમ કોટી ઉપાઇ,
નંદ કે નંદન જિન છુઓ ગલે બૈયાં;
ઊર હાર કનક મોતિનકી માલ;
તજું અંતર સુગંદ વા પુષ્પપાન. છાંડો. ૨

રાગ કાફીનો—ચોતાલ.

માઇ ! તેરો પ્યારો રી, પ્યારો તેરો સુગર કાન;
માંગે મોપેં દધિકો દાન. માઇ. ટેક૦

---

[1] શોક્ય.

અટપટે બોલ બોલે, આયકેં ઘૂંઘટ ખોલે;
બૈયાંકોં મરોર મારે, ધ્રગન બાન. માઇ. ૧
એસી જો અનીત કરે, કાહૂકી ન શંક ધરે;
ડગર ચલત રોકે, નિપટ નાદાન. માઇ. ૨
દેવા જો અનીત કીની, મથની પટક દીની;
યમૂના કે તીર ઠાડો, ગાવે તાન. માઇ. ૩

કાફીની ઠુમરી-તાલ ત્રિતાલ.

ગાઓ ગુનીજન મન ઇતનો બિચારી રે. ગાઓ. ટેક૦
સપ્ત સુરન એકીસ સુરછના, ગ્રામ તીનકોં સંભારીરે. ગાઓ. ૧
સમય આલાપ અરથ સુભ બાની. ગુરૂમુખ લીજે ઉરધારીરે. ગાઓ. ૨
રાગની રાગ તાલ સમઝી ગત, તાન પરનકોં સુધારીરે. ગાઓ. ૩
સુગર સજનકોં ભેદ બતાઇયેં, બરન બરન બિસ્તારીરે. ગાઓ. ૪
દેવીદાસ ગુન ગાઇ રીઝાઇયેં, કેશવ કુંજબિહારીરે. ગાઓ. ૫

કાફીની ઠુમરી-તાલ ત્રિતાલ.

આજ બન બાંસુરી બજાવે ગિરધારીરે. (બે વાર) ટેક૦
ગ્વાલબાલ સંગ હિલમિલ ગાવત, તાન બરનકોં સુધારીરે. આજ. ૧
નાદર દર દર દાની ત્રોંમ ત્રોંમ તનનનનન, તાન લેત ન્યારી ન્યારીરે. ૨
ધાકિડાંગ ધાકિટકિટ તાતા બજત મૃદંગગત, સંગીત શબ્દ ઉચારીરે. ૩
મમ પધનીની સારી ગરી સાનીની ધપ, સરગમ બોલ બિચારીરે. ૪
દેવીદાસકે શ્યામ રસીલે, દેખન ચલીએં પ્યારીરે. આજ. ૫

રાગ પીલુ-તાલ ત્રિતાલ.

આજ અલી યમુનાજી કે આરે, જમુનાજી કે આરે.
બેન બજાવત શ્રી ગિરધારી. આજ ટેક૦
તીન ગ્રામ તીન સપ્ત મૂર્છના, સપ્ત સુરન સગતાલ બિચારી. આજ. ૧
રાગની ત્રીસ રાગ ખટ ગાયે, આન રાગ સબ ગાત સુધારી. આજ. ૨
નીર સમીર અચલ ભયે સજની, બેનસેં મોહન મોહની ડારી. આજ. ૩
ભૂલગઇ સુધ પનીઆ ભરનકી, સુનત શ્રવન મૃદુ તાન પ્યારી. આજ. ૪
દેવીદાસકે શ્યામ રસીલે, દેખન ચલો સૈયાં કુંજબિહારી. આજ. ૫

(રાગ એજ.)

આજ ગઇ સૈયામેં મહી બેચન, રોક રહ્યો મગ મોહન કારો. ટેક૦
બ્રંદાબન બિચ જાન અકેલી, આયો અચાનક નંદ દુલારો. આજ. ૧
બૈયાં મરોરી મટુકી પટક દીની, એસો નાદાન યસોદાકો પ્યારો. આજ. ૨
નેનન સેંન કરી લરકનપેં, મેરો મહી સબ લૂંટ બિગારો. આજ. ૩
ઓરભઇ સો કહી ના જાવે, યા બ્રજમેં બ્રજરાજ ઠગારો. આ. ૪
દેવીદાસકે શ્યામ કુંજનમેં, આન પિયો દધિ છીન હમારો. આ. ૫

રાગ આશા-તાલ ચોતાલ;

કહિયો મોહનસેંરી, ઇતનીસી બાત. કહિયો૦ ૧
હમકોં બિયોગ દિયે બાંક કવન ? કહિયો. ટેક૦ ૧
અકરૂર ક્રૂર આયે, હરીકોં બોલાવવન કો,
ઉનહીકે સંગ કીનો, મથૂરાં ગવન. કહિયો. ૧
કરહીસેં કોલ દિયે, મુખહી સોગન ખાયે;
અબતાં બિલંબ રહિયો, કુબજા ભવન. કહિયો. ૨

ઓધવ એસેં કહિયો, બિનતી બિહારીજીકોં,
દેવા દર્સ દીજેં પ્રાન રવન. કહિયો. ૩

રાગ ભૈરવનો ચતરંગ—તાલ ત્રિતાલ.

મોહન બેન બજાઇ, પ્યારે મોહન બેન બજાઈ;
સુર ગ્રૅામ તાલ સમ માન ભેદસેં, ભૈરવ રાગ જમાઇ. પ્યારે. ટેક૦
નાદર દર દર દાની ત્રોંમ, ત્રોંમ તુમ્ દિર દિર દિર દાની;
ધીમ્ તન નન નન તાન મિલાઇ. પ્યારે મોહન. ૧
બજત મૃદંગ ગતત્રિકડ તાન ત્રિકડતાન,
ધાધા ગિડ ગિડ ધ્રાં ધપ મપ ગત છાઇ;
ત્રિકડ તાતા ધ્રિગડ ધાધા ધીત્રોંમ ધીત્રોમ ધાધા;
ધુમ્ કિટધા ધુમ્ કિટધા ધીં સંગીત દરસૅાઇ. પ્યારે મોહન. ૨
ભયો મુદિત મન સુરીનર મુનીજન;
અચલ પવન ખગ મૃગ બન રાઇ,
દેવીદાસકે સ્યામ રસીલે, સબ બ્રજબાલ રિઝાઇ. પ્યારે. ૩

ભૈરવીનો ખ્યાલ—તાલ પંજાબી ઠેકો.

દધિ બેચન ચલે બ્રજ નારીરે. (બે વાર)
ચલત ગયંદ ગત પ્યારી રે. દધિ. ટેક૦
કીંન શૃંગાર મનોહર નવસતરે, ઓઢી અંનોપમ સારીરે. દધિ. ૧
ઝાંઝર બાજત પદ જનનનનનરે, કર કંગનકીં છબીં ન્યારીરે. દધિ. ૨
મંજુલ હાર હિયે કંચનકેરે, મોતી માંગ સમારીરે. દધિ. ૩
દેવા બ્રજકી કુંજગલીમેરે, આય મલી બ્રજનારીરે. દધિ. ૪

ઇતિ શ્રી દેવાવિલાસ દ્વતિય ભાગ સંપૂર્ણ.

દેવાવિરહ વારિધિ પ્રથમ લહેરી.

એટલે

ઉક્ત કવિવર વૈકુંઠવાસી થયા બાદ તેમના સ્નેહી અને સંબંધી વર્ગે કરેલો કવિતા વિલાપ.

યોજક.

તેમના સ્નેહી શિષ્ય જાડેજા પ્રતાપસિંહ વિ. જૂણાજી.

પત્રી—કચ્છ.

દોહા.

ઉંમા કંત! ગુનવંતકો, કબહુ ન દેહુ મિલાપ;
જો મિલાપ હરિ! સજન દે, તો હરી લેહુ ન આપ! ૧
બિછુરન દુખ પ્રિય મિલન સુખ, એ દો અપરંપાર;
તદપિ બિછુરન દુખ બડો, વિદિત વિશ્વ મોઝાર. ૨
૫ ૫ ૯ ૧
*સર સર રસ શશિ કાતિ સુદિ, ત્રયોદશી શનિવાર;
દેવી દાન પયાન કરિ, બસે રામ દરબાર. ૩

સોરઠા.

સજ્જન બિછુરન પીર, જિનકોં ભઇ સો જાનહી;
તન મન હોત અધીર, બાની ના બરનન બને. ૪
તદપિ વિરહ વિલાપ, આપહીં પ્રગટત અનચિતે;
કિંચિત કથત પ્રલાપ, હરિ હરિજન મન એક ધન. ૫

---

* સંવત ૧૯૫૫.

હે ! દેવા ! દિલદાર ! દૂર બસે દુનિઆ તજી;
આક્રઁદ કરત ઊચાર, સજન સઁબંધી શોકયુત. ૬

દોહા.

શીતલ સરલ સ્વભાવ ચિત, વિગત કામ મદ ક્રોધ;
બોધવંત દરસંત જગ, મગ પુનીત મન શોધ. ૭
રાધા માધા વિમલ જશ, રસયુત કાવ્ય રચીત;
ગાન તાન વિજ્ઞાન ધન, પૂર્ણ પ્રકાશત પ્રીત. ૮
સૌભનીક સુંદર છબી, મધુર મંદ મુસકંત;
મનહર મૂરત ગુનનિધિ, નેન અગ્ર દરસંત. ૯
મધુર બેન ચિત ચેન પ્રદ, ભક્તિદાનિ સતસંગ;
રંગ બિજોગી ઊર બસ્યો, બરનોં છંદ ભુજંગ. ૧૦

ભુજંગ પ્રયાતવૃત્ત.

બસે રામ ધામા તજીકે ઝહાના,
[1]જિઆના ભયાહે હમારા મહાના;
તપાવે વપૂકોં જુકી શોક જ્વાલા,
અહો ઇષ્ટ દેવા બિના મેં બેહાલા. ૧
હરી હેર લીના અબે પ્રાણપ્યારા,
નિરાધાર કીના બને કયોં ગુજારા;
પિલાયા પ્રભુજિંદકોં પ્રેમપ્યાલા,
અહો ! દોસ્ત ! દેવા બિનારી બેહાલા. ૨
નહી ચેન આવે ઉદાસી રહાવે,
રહ્યા કોન ભાંતી અરે ! દૈવ ! જાવે;
અરે ! ખેંચ લીના ખુશાલી [2]રસાલા,
અહો ! દૈવ ! દેવા બિહીના મેં બેહાલા. ૩
સારંગી સુરંગી મૃદંગં તંબૂરં,

---

૧ નુકશાન. ૨ સમાજ.

સતારંદિ બાજે ન બાજે મધૂરં;
નહી તાવસં બોલ બોલે [1]રસાલા,
અરે ! મિત્ર દેવા ! બિનાહોં બેહાલા. ૪
પીઆના બીઆના[2] લગે પ્રેમભાવં,
ભયા ગાનરૂતાન ભાવં અભાવં;
રૂચે ના તલાના ત્રતાલા ચૌતાલા,
અહો ઇષ્ટ દેવા બિના મેં બેહાલા. ૫
બને સાજ સંગીત કે મોદ દાતા,
બિયોગી ભયા મેં કછુ ના સુહાતા;
છયે રાગ [3]ત્રીરાગની રાગ માલા,
અરે દૈવ ! દેવા બિહીના બેહાલા. ૬
પરે પુસ્તકં હે રસાલં કૃતિકે,
મનાનંદ તોહૂ લગે નાહીં નીકે;
સુકાવ્યામૃતં ભેદ યુગ્તં રૂપાલા,
અહો મિત્ર ! દેવા બિહીના બેહાલા. ૭
જમેયા અખારા હમારા બિગારા,
અહો દૈવ ! તૂં કયોં ભયાજુ ઠગારા;
નશારા વિચારા કીયા ના કૃપાલા,
બિના દોસ્ત દેવા અરેરે ! બેહાલા. ૮
[4]હરી મૂડિ તેંજુ હમારી મુરારી !
તિહારી બિગારી નિવાસં અટારી;
હુવા હોયગા કોય કેશો ! [5]કસાલા,

---

૧ રસયુકત. ૨ બીઆમણો. ૩ ત્રીશ. ૪ હરણ કરી. ૫ તંગી–તાણ.

અરેરે અબે દૈવ કીના બૅહાલા. ૯

ખની ખૂબ ખૂબી હરિ! કયોં બિગારી,
ગતી ક્યા હમારી અબે હોનહારી;
નહી નાથ મોંપેં નિગાસેં નિહાલા,
અરેરે! અબેરે અરેરે બૅહાલા. ૧૦

લગી લાલસા એક દેવા તિહારી,
થકોં ના વિયોગી વ્યથાકોં નિવારી;
રૂચે વિશ્વ મેના ખુશી ખેલ ખ્યાલા,
અહો દૈવ! દેવા બિના મેં બૅહાલા. ૧૧

દિસે સુન્યકારી દિસાકે વિભાગા,
ગ્રસીહે ગલાની મહા મોદ ભાગા;
દસ્યો ગ્રેહ વ્યાલા બદી ઊરજવાલા,
અહો ઇષ્ટ દેવા બિના મે બૅહાલા. ૧૨

હમારે [1]સતારે નહી તેજ આજૂ,
હરી પ્રાણ દોરી ગરીબા નિવાજૂ;
બનાઇ બિગારા રખા ના સમાલા,
અહો મિત્ર દેવા બિના મેં બૅહાલા. ૧૩

સદા યાદ આતા ન જાતા બિસારા,
વ્રથા જાનહારા હમારા જમારા;
સિધારા બિનોદં બિપત્તી બિસાલા,
અહો ઇષ્ટ દેવા બિનામે બૅહાલા. ૧૪

મનીહીન જ્યોં દીન દીસે ભુજંગા,
પરાધીન પંખં બિહીનં બિહંગા;
મરાલા બિયોગી ભયામાન[2] તાલા,

---

૧ સમાજ વૃદ્ધી પામેલું. ૨ માનસરોવર.

અહો મિત્ર દેવા બિના મેં બેહાલા. ૧૫

અહો જીવ મિથ્યા અબે શોક કીજે,
બિના કારનં દૈવકોં દોષ દીજેં;
ટળે ના બિધીજો લિખા અંક ભાલા,
અહો મિત્ર દેવા બિના મેં બેહાલા. ૧૬

પ્રભુંજો કરેસો ભલીહી કરેહે,
લિયા આપ દ્વારે પ્રસંગં [1]પરેહે;
તથાપિ તપાસા કિસીકા ન હાલા,
અહો મિત્ર દેવા બિના મેં બેહાલા. ૧૭

ગયા બાપ દાદા ભયા ના ઇરાદા,
બિપાદા તજો કાલકી હે મ્રજાદા;
અરે રંક કયા ના રહે કો ભૂપાલા,
અહો! ઇષ્ટ દેવા બિના મેં બેહાલા. ૧૮

ચલેસો મિલે ના ગલેસોં ગલા દે,
મિલાદે ન એસા બના કો [2]ઇલાદે;
રહેના ઝહાના તજો શોક ટેવા,
મિલે આપ ભેવા ભજો ઇષ્ટ દેવા. ૧૯

છપ્પય.

બસે રામ આગાર, પ્યાર હમપર બિસરાવત;
છાવત ઉર આનંદ, મંદમંદહીં મુસકાવત;
ગાવત રાગની રાગ, રાગ યુત સાજ બજાવત;
લાવત સુર ગતિ તાલ, ખ્યાલ કર ઇશ રીઝાવત;
ખટ રાગ રાગની નવિન રચિ, રાધાવર રંજન કીયા;
બિન મતલબ સબ જગ જાનિકેં, દેવાનેં ત્યાગી દીયા. ૧

---

૧ કામ પડતાં. ૨ જુદું.

સોરઠા.

સદગુન ગનકા લેખ, લેખનિસોં લિખિ ના શકેં;
પ્રીતમ પ્રીતી પેખ, ચિતવન બાછત ચોગનોં. ૧

સવૈયા.

લાયકી લેખનસોં ન લિખાત, કથી ન સકેં રસના ગુન ગેરા;
કયા બરનોં બરની ન બને, ગુનસાગર નાગર શાંત બડેરા;
મિત્ર સુજાન પ્રયાન કિયો હરીધામ બસે હતભાગ હમેરા;
વ્યાકુળ ખ્યાલ મની બિન જ્યોં, પ્રિય દેવ બિના બિલખે દિલમેરા. ૨
ચંદ ચકોરહીં યાદ પરે ઘન નાદ મયૂરજુ ચાતુક મેહા;
અલ્પહી નીર બિહીન જુ મીન મલીનહીં દીન પરીં બિલખેહા;
હીન મની ફની જ્યોં હમકોં, પ્રિયદેવહીકા અવસાન બિછેહા;
યાદ પરે ગુન સીલ સ્વભાવ પ્રતાપ બઢે દિલ દાજત દેહા. ૨
કીરત કોટ રચે મનરંજન ગાન સુકાવ્ય જમાય ઝહાના;
રામ સુધામહીં બાસ બસે, પ્રિયદેવ સુજાન બડે ગુનવાના;
સોચતહે મહિ મંડલમેં જન, અંતકી બાત સુની બિલખાના;
મિત્ર મિલાપ બિના પરતાપજુ હાય હમારિ હયાતિ હેરાના. ૩

કવિત્ત.

પંડીત જો દેખે સોતો સંગીત સમુજે નાહી;
રાગ સાજ જાને સોતો કાવ્યમેં અલેખેહે;
કાવ્ય ભેદ જાને સોતો માનુષકે યસ ગાવે,
માનયુક્ત રહે હરી યસકો ન લેખેહે;
હરીયસ ગાવે તાલ સ્વર ફાવે કાવ્ય રચે,
પંડીત પ્રવીન સુભ ગુનમેં વિશેખેહે;

એસેં ગુનખાની નિરમાની જ્ઞાની શીલવંત,
હમનેં તો હયાતી મેં દેવા એક દેખે હે. ૧

દોહા.

પ્રીત નિભાવન પરખ પન, ન્યાય નીતિ નિપુણાઇ;
વાક્ય વિનોદરૂ વિબુધતા, દેવા સંગ સિધાઇ. ૧
ગાન તાન ગંમત ગઇ, કાવ્ય કલા ચતુરાઇ;
સાહિત સંગિતકી છટા, દેવા સંગ સિધાઇ. ૨
રાગ રંગ રસ ભંગ ભય, સાજ ઠાઠ સુધરાઈ;
સાહિત સંગીતકી છટા, દેવા સંગ સિધાઇ. ૩
સભા રીઝાવન સુજ્ઞતા, હાસ્ય વાક્ય હરિપ્રાઇ;
મનરંજન મેહ્ફલ છટા, દેવા સંગ સિધાઇ. ૪
ચિત્ર કાવ્યકી ચતુરતા, શબ્દ સુ સુંદરતાઇ;
સત્ય બોધ અરૂ સજનતા, દેવા સંગ સિધાઈ. ૫
શીલ સ્વભાવરૂ સરલતા, સત્ય સુમતી સરલાઇ;
ભક્તિ જ્ઞાન ગંભીરતા, દેવા સંગ સિધાઇ. ૬
વ્રજબિહારી શ્રી કૃષ્ન યસ, રસિક કાવ્ય રચનાઇ;
તાલ ખ્યાલ ગત સાજકી, દેવા સંગ સિધાઇ. ૭
સુધર ભયા સબ રીતમેં, પ્રીતવંત પુનિતાઈ;
રાધાવર રીઝી તબે, બેહિલિયા બોલાઇ. ૮
દેવા તબ દુનિયા તજી, ભવમેં કરી ભલાઇ;
ભેટ ભઈ ભગવંત સોં, હરખ નિરખ ગુનગાઇ. ૯
દેવા સેવા કારનેં, બસે રામપદ જાઈ;
કૃપાદષ્ટ કેશવ કરી, જયજય શ્રી યદુરાઇ. ૧૦

પદ રાગ ૬ માં ચાલે. સીહાનો પીલુ, ઝીંઝોટી ઇત્યાદિ

"હમકો છાંડ ચલે બનમાધુ. એ રાગે."

દેવૉ બિના દિલહે દિલગીરી "દોસ્ત બિના દિલહે દિલગીરી"
લેર ઊદાસી ફેર લગીરી, દેવા૦
આનંદ દીના દોસ્ત નવીના, હરિપદ લીના પરવીનારે;
મિત્ર બિહીના મોજ રહીના, શોક સહીના ભેલીનારે. દેવા. ૧
પ્રીત પુરાની તજી દિલજાની, ના પહીચાની જન ગ્લાનીરે;
લીન સેલાની પદ નિરવાની, સેંૅ સુખખાની દરસાનીરે. દેવા. ૨
મિત્ર મિલાપા બિન પરિતાપા, જાતન કાપા સે વ્યાપારે,
વ્યર્થ વિલાપા જપહરી જાપા, થિરથાપા કરલે આપારે. દેવા. ૩

કવિત્ત.

ગાન તાન સંગીતકી, રીત સમુજાઇ ભલી,
અસલી બજાનો પરીશ્રમસેં સિખાયોહે;
કાવ્યકલા ભલાઇકો, ભેદ દરસાઈ દીનો,
વાકય મૃદુ બોલવેકો, રસ દરસાયોહે;
ઊરનમેં રહ્યો ઉપકારહી અનંત મોંપે,
દેવા દિલ રંજનનેં લાડહી લડાયોહે;
અજરાજ કહે આજ ઉદાસી છવાઇ ઉર,
એસો મેરો પ્યારો કાકો સ્વર્ગકોં સિધાયોહે. ૧
ગોવો ઓર નાકો કહે, હાય મેરો પ્યારો કાકો;
કચ્છહિ ઇલાકો રાકો, તજી સ્વર્ગ ગયેહે;
સાહિતકો માપ દેવો, સંગીત આલાપ દેવો,
સુનીતિકોં થાપ દેવો, ભેવો લેવો રયેહે;
ઓંકર હમારે ગયે, મોક્કર સુધારે ભયે,
ઠાકર પ્રહારેતેં બિયોગ તાપ છયેહે;

હમારી તમામ હામ, સરે નહી એકે કામ,
અહો બિધી! બામ ગતિ, દેવો દેવ ભયેહે. ૨
બિલોપાત યોગ નહી, દેહપાત વાન જાન,
રહીના રહાત વહી બાત ચલી આઇહે;
યરાહે અપાત સોઇ યત્નસોં નિભાત તાઁકી,
અંબરતા અંદહિ કલિંદ હદ છાઇહે;
સુયરા જગાયો ઇહાઁ હરી યસ ગાયો અરૂ,
ઊહાઁ રામ ધામ પાયો, લાભસોં સવાઇહે;
શોક યોગ નાહી દેવીદાન યોં બિચારી દેખે,
જટાશંકર બેશક યોં, ગ્રંથ બાત ગાઇહે. ૩

દોહા.

વ્યાકુલ પ્રબલ વિયોગમેં, અંતર રહત ઊદાસ;
દેવીદાન સુજાનકા, ભગવત ભવન નિવાસ. ૧
દેવા તેરે દર્સકોં, તર્સ રહે મુજ નેન;
મનહર મૂરત મન બસે, બિસરત નહી દિન રેન. ૨
હરીજન મનસુખ વિમલ બુધ, ભક્તિ જ્ઞાન ગંભીર;
સુંદર સૂરત વિગત મદ, સદગુન સદન સુધીર. ૩
દિલ રંજન દરસાઇએં, દેવા નિજ દીદાર;
ઇષ્ટ કૃપાકર આઇએં, દરશન દેન ઊદાર. ૪
ખટરૂતુ છિતિ છબિ છાવહી, પાવહિ જન આનંદ;
દેવા તેરે બિરહમેં, રચોં ત્રિભંગી છંદ.. ૫

છંદ ત્રિભંગી.

શાદરહિ રૂતુ આઇ, છિતિ ત્રણુ છાઇ, ઘન ઘહરાઇ, [1]જરઠાઇ;
નવકંજ ફુલાઇ, નવ[2]નિસિ પાઇ, રાસ રચાઇ, [3]જગમાંઇ;

---

૧ બૂઢાઈ. ૨ નવરાત્રી. ૩ જગદંબામાતાજી.

દીપમાલ બનાઇ, સાજ સજાઇ, જન સુખદાઇ, સંસારા;
દે॥ દિલદારા, ઇનરૂત ન્યારા, દરસ તિહારા, દે પ્યારા ! ૧
હિમરૂત હલકારી, ઊતર બયારી, સદન અટારી, સુખકારી;
ઉનુંબર [1]ધારી, તન સણગારી, ભૂખ બલકારી, નરનારી;
સીતલ જલ [2]ધારી, સરજુ બારી, હેમ [3]પહારી કે દારા;
દે॥ દિલદારા, ઇનરૂત ન્યારા, દરસ તિહારા, દે પ્યારા ! ૨
રૂત શશિર સુખાકર, દન્ત દિગંબર, મેળા સુંદર, આડંબર;
શિવરાત્રી પાકર, સેવત શંકર, ગાવત સુરભર, રાગ સુઘર;
બજ તબલ મનોહર, તાલ મિલાકર, રવ બાજિંતર, લલકારા;
દેવા દિલદારા, ઇનરૂત ન્યારા, દરસ તિહારા, દે પ્યારા ! ૩
રૂતુરાજ સુહાવત, બસઁત બધાવત, ગુનીજન ગાવત, મન ભાવત;
હોલી દિન આવત, મોદ મચાવત, ખેલ ખિલાવત, હુલરાવત;
કોકિલ સુર ફાવત, ધ્રુમછબિ છાવત, રામ જમાવત, અવતારા;
દેવા દિલદારા, ઇનરૂત ન્યારા, દરસ તિહારા, દે પ્યારા. ૪
ગ્રીષમ ગહરાઇ, તાપ તપાઇ, જનમન ભાઇ, અમરાઇ;
કુંજન બિકસાઇ, કુસુમ લતાઇ, સીતલતાઇ, તરૂછાઇ;
સૌરભ છહરાઇ, મન હરતાઈ, જલ ફહરાઇ, ફૂઁહારા;
દેવા દિલદારા, ઇનરૂત ન્યારા, દરસ તિહારા, દે પ્યારા. ૫
બરષારૂતુ જોરં, ગરજત ઘોરં, જલદ જકોરં, બનછોરં,
ચપલા ચહુ ઓરં, દમકત દોરં, દાદુર સોરં, સર ઠોરં;
મલ્લાર મનોરં, મોર કિસોરં, સરિત હિલોરં, હલકારા;
દેવા દિલદારા, ઇનરૂત ન્યારા, દરસ તિહારા, દે પ્યારા ! ૬
રૂતુ અંત ન આયે, પ્રિય બિસરાયે, હરીપદ પાયે, મન ભાયેં;
સજ્જન બિલખાયે, દરસન ચાયે, બિકલ રહાયે, ગુન ગાયે;
મન મહેલ બસાયે, છબિ છહરાયે, એ વરદાયે, આધારા;

---

૧ ધારણુ. ૨ જલપ્રવાહ. ૩ ડૂંગર યા ટેકરી.

દેવા દિલદારા, મન મહેલારા, દરસ તિહારા, દે પ્યારા! ૭

છપય.

માનવ તન ધરી દેવ, સુયસ મહીપર બિસ્તારે;
હરીયસ કાવ્ય સંગીત, પ્રીતકી રીત પસારે;
જ્ઞાનકલા ગંભીર, ભક્તિરસકો બિલ્લસાયે;
જિજ્ઞાસુ ઉપદેસિ, બાસ હરિસદન બસાયે;
કર જુગલ જોર વંદન કરૌં, ઇષ્ટ અનુગ્રહ કીજિએ;
દિલદાર પ્યાર દિલ બીચ કરિ, દેવા દરસન દીજિએ. ૧

સોરઠા.

પૂરણુ કરતલ્લ પ્યાર, વસુધાપર મળશે વળી;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૧
હેતુ મિત્ર હજાર, વિધ વિધ મળશે વિશ્વમાં;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૨
ગુણીજન ગુણ આગાર, રંજન કરેશ રાગથી;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૩
હરીજનને હિતકાર, ભાગયોગ ભેટે ભવે;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૪
ભલપણના ભંડાર, ભવમાં કદીક ભાળસું;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. [illegible]
વાક્ય મધુર વદનાર, આદર આનંદે દીયે;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૬
સદા કરે સંભાર, સ્નેહી ઝાઝા સ્નેહથી;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૭
કાવ્ય કથા કરનાર, હરખ વધારે હેતથી;

પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૮
અતિ કરતલ ઉપકાર, અવનીમાં અવલોકશું;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૯
સુખ મળશે સંસાર, હશે હયાતી હંસની;
પણ દેવો દિલદાર, વીસાર્યો નવ વીસરે. ૧૦
આંખે આંસૂધાર, ચોધારી ચિત ચિતવતાં;
સોઃ દરજે શ્રેયકાર, શ્રીવર સુમરણ સરવને. ૧૧

પૂર્ણતા સમય તથા કર્ત્તા નામનિરૂપણ.

ચોપાઈ.

૧ ૯ ૫ ૫
સંવત સશિ રસ સર સર સાલા;
દ્વાદશિ શશિ દિન પક્ષ ઊજાલા;
પોસ જોસ અપસોસ બઢેરી;
[1]હરીં પ્રતાપ બરની બ્રહ લેરી. ૧

ઇતિ દેવા વિરહ વારિધી પ્રથમ લહરી સમાપ્ત.

લાવણી.

(ત્રકડ કિંવા ખડી રંગત) "રાગ સમયાનુ સાર."

ખણે મહીજો બોજ, વિકણેંલા રોજ, સખીયનજી ફોજ, ગિનિનેં સ્યાનીં
મથુરાજી વાટ, ગિની મહિજા માઠ, ખૂબ કરે ઠાઠ; રાધા રાની. ટેક૦ ૧
રસ્તેમે કાન, કરેતો તોફાન, મઁહકે મહીંજા દાણ, નંદજો કાનો;
દે ગોપી દાણ, હણે મુંકર તાણ, છડીંઆન હાણ, કર ઠેરાણો;
સુણુ સખી ગાલ, આય અસલ ચાલ, ગિનધોસેં હાલ, ગ્વાલણ ગેલી;

---

૧ સિંહ પ્રતાપ (પ્રતાપસિંહ).

ખપે તોંકે લજ્જ, દે દાણ અજ્જ, ભાસેતીં કજ્જ, વિઞાનેં વેલી;
ચ્યો છેલો બોલ, કર મન્મેં તોલ, નકાથાઁધે હોલ, વરિ હેરાની મ.૨
નાય તોંજો રાજ, હુંઇ રખે દાજ, ઠલા વિજેં વાજ, મનજા ભોરા;
ગોકુલજા ચોર, તું ચાર ઢોર, હુંઇ મુંકર જોર, નંદ જા છોરા;
ખરો કંસરાય, અસાંજો આય, હુકમત્ હલાય, જેડી મરજી;
જાણા તોજી જાત, છડે માત તાત, ભગે આધી રાત, આવેં ધિરજી;
કાનામકર વોધ, થ્યો એંયે જોધ, કંસ કરે શોધ, આય અભિમાની. મ. ૩
આય કંસ કેર, મારે કરિયાં જેર, તેમેં નાય ફેર, બેશક જાની;
છડ કૂડો જોડ, ખાલી મથાફોડ, તોંજા લાઇયા કોડ, આઁઉં નંદદાની;
રખતું સરૂર, છડીદે મગ્રૂર, જોબન્ જે પૂર, મેં છકેલી;
હણે છડહટ, જટ પટ મટ, રખ અસાઁ વટ, તૂં અલબેલી;
વધે ન વેર, દે દાણ હેર, પોંધો ન ફેર, સુણ દેવાની. મથુરા. ૪
હણેં સમજે સાન, મૂંજા જીવન પ્રાન, ગિનો મૈજા દાણ, આહીં નંદલાલા;
હણે છડયો જોલ, લાઇ વિધી હેલ, ગિનોં દાણ છેલ, આઁઇ છોગાલા;
સુએં સુખજા ધામ, આઁઇ સુંદરશ્યામ, કાન પ્યારા રામ, આઁઉં બલિહારી
મૂંજે મનજી આસ, આઁજે ચરણ પાસ, પ્રભુ પ્રીતે વાસ, દયો ગિરધારી
આનંદ કંદ, આઁઇ નંદનંદ, ચરણાર્વિંદજી આઁઉં બાની, મથુરાવાટ. ૫

રાગ જીંજોટી–તાલ દીપચંદી.

"નાથ કૈસેં ગજકો બંધ છુડાયો" એ રાગ.

દેખલે દિલ્મેં દોસ્ત દિદારા, ગુરૂમુખ જાનો નહી નાથ ન્યારા. ટેક.

ભાસત જો બ્રહ્માંડહી ભીતર, પિંડ વિશેસો પ્રકાશા;
બ્યાપક વિઠ્ઠલ સચરાચરમેં, નિરખ્યા જાત નિરાસા. દેખલે. ૧

પરદે આડે અહં મમકેરે, આવર્ન એહી બડેરા;
નૂર પ્રકાસે સૂર સદોદિત, બાદલ બીચ અંધેરા. દેખલે. ૨

બાદલકોં ગુરૂ બોધ બયારી, પલ્મેં કરત વિખેરા;
પ્યારે રામ સ્વયં સુખકારી, આતમ અર્ક ઊજેરા. દેખલે. ૩

રાગ પીલુ-તાલ દીપચંદી.

"મન મેરા વે" એ રાગે.

કહાં ? આનંદ વે, શોક કહાં ! હે અપારા;
જગ રીત વિચિત્ર પ્રકારા ! ટેક૦

કહા ! મંગલ વ્યાહાદિક સાજારી, મન મોહન બાજત બાજારી;
દિલ રંજન વે, ગુનિજન રાગ ઊચારા. જગ રીત. ૧
કહા મર્ણું અમંગલ હોવેરી, નર નારી ભયંકર રોવેરી;
મન વ્યાકુલ વે, જારે તન મહજારા. જગ રીત. ૨
સુખ દુખમય હે જગ સારારી, નહી એન બને બિસતારારી;
યોં રચના વે, વિરચી હે કિરતારા. જગ રીત. ૩
પ્યારે રામ હરીગુન ગાનારી, મન ગુરૂગમસેં સમજાનારી;
નિર બાનાવે, પાવેગા તબ પ્યારા. જગ રીત. ૪

રાગ એજ.

હે અવસર વે, રામ ભજનકા પ્યારા;
રામ નામ ઓધારન હારા. ટેક૦
ગજ ટેર સુની હરી ધાયેરી, બિન બાહન પ્યાદે આયેરી;
જલ ભીતર વે, સત્વર જૂડ વિદારા. રામ નામ. ૧
અજા મેલહિસેં અપરાધીરી, જિન મોક્ષગતિ નહી સાધીરી;
હરિ નામહી વે, સંશ્રતિ શોક નિવારા. રામ નામ. ૨
"પ્યારે રામ" નામ સુખ દાનીરી, જગવેદ વદે યોં બાનીરી;
જબતબહી વે, નામ કરે નિસતારા. રામ નામ. ૩

—:૦:—

લાવની ખડી રંગત-"કિંવા સમયાનુસાર રાગે"

શ્રીગુરૂ ઈશ્વિર રામનામ રટ, ખટપટ સંશ્રતિ ઝટ સટકે;
નિજપદ સદ પ્રદ કદમ પદમ રત, નિત ચિતવત ચિતમત હટકે. ટેક.
સુરત સુરત વ્રત દ્રસત નિરંતર, સહજ સમાધિ સુખદ લટકે;
આગમ નિગમ સાર વચનામૃત, વદત વિગત જનમન ખટકે. શ્રીગુરૂ. ૧
મનહર મૂરત સુંદર સૂરત, શાંતસુધારસકોં છિટકે;
પાન કરત પરિશ્રમ બિન તતછિન, જન વાસી તુરીયા ત્રટકે. શ્રી. ૨
નરખત છબિ સુમરત કરતવ ઉર, વિમલ અમલ મલકોં પટકે;
બ્રહ્માનંદ મગન ગુનસાગર, ઉપદેશક જ્યોં પોપટકે. શ્રીગુરૂ. ૩
જીવનમુક્ત ભજન રંઁગ ભીને, અનહદ પદમેં ચિત અટકે;
કહઁની સમ રહઁની સુખ દેની, પ્રગટ પ્રકાસત સત ચટકે. શ્રીગુરૂ. ૪
ચાર પદારથ દાયક ગુરૂપદ, ઓર ઠોર ભવ ક્યોં ભટકે;
"પ્યારે રામ" ચિતવ અતુલવ અબ, મંગલકર મન નિજ ઘટકે. શ્રી. ૫

પ્રસંસાશ્રય અને સમાપ્તી સમય ઈત્યાદિ.

કવિત્ત.

ચતુર[1] વરગ ચિત, રંજન, ચતુર[2] ફલ,
દાની સુખ સાની બિલસાની બાની ભાસહે;
રસીક જનોંકોં ખાસ, નિવાસ વિલાસનકો,
શ્રી દેવાવિલાસ ભાગ દૂજો સુખ રાસહે;
૧ ૯ ૫ ૬
સંપૂરન શશિ રસ, સર શાસ્ત્ર મધુ માસ,
અષ્ટમી ગુરૂ ઉજાસ, પક્ષમેં પ્રકાશહે;

---

૧ પામર, વિષયી, મુમુક્ષુ. અને જ્ઞાની. ૨ ધર્મ, અર્થ, કામ, મોક્ષ.

[1]અએ ભાગ તીજો પૂર્ન કીજો શ્રી નિવાસ! યેહી—
દાસ ઊર આસ આપ પાસ અરદાસહે. ૧

દોહા.

હરિ પ્રતાપ પ્રિય પ્રગટ કિય, હરિ પ્રતાપ ગુનગ્રામ;
હરિ પ્રતાપ પૂરન હુઇ, હરિ પ્રતાપ હિય હામ. ૧

ઇતિ શિવમ્.

॥ ॐ हरि ॐ ॥

॥ शान्तिः ॥

---

૧ હવે દેવાવિલાસ ભાગ ત્રીજો તે હે ભગવત નિ- વિઘ્ને પૂરણતાથી પ્રગટ થવા આપ પ્રતે પ્રાર્થના છે તેની પ્રસંશા લખવા ધારતો નથી. કારણ કે પ્રસંશા રૂપજ છે. માટે તે થોડી મુદતમાં પ્રગટ કરવા ઉત્કંઠા ધરાવી છે.

જાહેર ખબર.

સજન સ્નેહીમંડળ મારફતે પ્રસિદ્ધ થયેલાં પુસ્તકો.

પુસ્તકનું નામ	કિંમત રૂ. આ. પા.
૧ પદ્યાલય પ્રથમ ઝરોખા......	૦—૪—૦
૨ દેવા વિલાસ ભાગ પ્રથમ.....	૦—૪—૦
૧ પદ્યાલય જુગલ ઝરોખો......	૦—૨—૨
૧ છપનીઆ કાળાદિ દુસહ દુખો નિવૃત માટે ગોરક્ષની આવશ્યકતા...............	...૦—૨—૦

ઉક્ત પુસ્તકોના પ્રષ્ટે જાહેર ખબરમાં આ દેવાવિલાસ ભાગ બીજાની કિંમત બે ત્રણ આના લખેલ પણ તેમાં વિશેષ કાવ્યનો સમાવેસ કરતાં કિંમતની વિશેષતા.

૧ દેવાવિલાસ ભાગ બીજો......	૦—૪—૦

ઉક્ત પુસ્તકો નીચે લખેલ ઠેકાણેથી રોકડી કિંમતે મળશે.

ભુજનગર—શ્રી "સરસ્વતી શૃંગાર" ઑફિસ
કચ્છ-**પત્રી**—ઠકર. વીરજી વિ. લખમસી.
કચ્છ-**આબીઆ**-ઊક્ત કવીશ્રી તરફથી... ...એરાજા રે
કચ્છ-**ભોજાએ**-સોની ડુંગરસી વિશ્રામ.
કચ્છ-**નારાયણપુર**-જોશી મકનજી તુલસીરામ... કેરા ે
એરાજા—દવે જટાશંકર દામોદર તથા ઠકર મુરારજી દેવા
આસંબીઆ—ઠકર. ગોપાલજી પરષોત્તમ.
કચ્છ-**વાકી**—રાજગોર. લધાભાઇ ધનજી. કચ્છ—વાકી.
કચ્છ-**રાયધણપુર**-અજાચી કેશવજી હરસુરજી. ભુજ—વ્રજભાષા પાઠશાળા.

નૉટપેડ કાગળ લેવામાં આવશે નહિ. પુસ્તકનો ટપાલ ખરચ મંગાવનારપર છે.